प्रारंभिक

गायन - वादन (स्वरवाद्य)

पूर्णांक : 50 न्यूनतम 18
क्रियात्मक : 40 शास्त्र (मौखिक) 10

सूचना : इस परीक्षा में स्वर और ताल से परिचित होना तथा उसका क्रियात्मक संगीत में साधारण प्रयोग करना विद्यार्थी से अपेक्षित है। इस परीक्षा के लिए शास्त्रीय ज्ञान की जांच क्रियात्मक के समय मौखिक रूप में की जायेगी।

शास्त्र :
पाठ्यक्रम के रागों का वर्णन (ठाठ, स्वर, समय, वादी, संवादी, आरोह- अवरोह) ताल: कहरवा, दादरा, तथा त्रिताल का ज्ञान। हाथ से ताली देकर बोलने का अभ्यास सोलह मात्राओं के समान आठ मात्राओं का त्रिताल (मध्यलय) भी प्रमाणित है।

क्रियात्मक :

अ) स्वरज्ञान शुध्द स्वर, अलग अलग तथा सरल समुदाय में गाना - - बजाना तथा पहचानना निम्नलिखित स्वर अलंकारों से प्रारंभिक परिचय |

अलंकार :-

१) सारेगमपधनीसां

२) सारंग, रेगम, गमप सानीध, नीधप, धपम

३) सारेगम, रेगमप, गमपधसांनीधप, नीधपम

४) सारेसारेग, रेगरेम.. .... सोनीसांनीध, नीध, नीधप

५) साग, रेम, गप, मध.. ...... सांध, नीप, धम

६) सा, सारेसा, सारेगरेसा सा सांनीसां, सांनीधनीसां

आ) रागज्ञान निम्नलिखित रागोंमे एक-एक बंदिश या गत स्वरतालबध्द गाना / बजाना।

दुर्गा, कापी, खमाज, भीमपलासी, बालेश्री भूपाली, देस इन सभी रागों के आरोह अवरोह और पकड़ गाना-बजाना तथा सरल स्वर समुदाय से राग पहचानना।

अंकपत्रिका :

इस परीक्षा के लिए हर एक विद्यार्थी के लिए 10 मिनट का समय निर्धारित किया गया है। हर एक छात्र की परीक्षा अलग-अलग लेना आवश्यक है। प्रश्न पूछते समय हर एक कॉलम में अलग अलग रागों पर प्रश्न पूछना चाहिये जिस से पूरा पाठ्यक्रम जांचा जा सकता है। हार्मोनियम का उपयोग केवल आधार स्वर (षड्ज पंचम / मध्यम) के लिए होगा। प्रथम राग गाते समय संगत करने की अनुमति होगी।
स्वर लगाना (सा. प. सां.) तथा एक अलंकार 4 अंक । पूछे गए रागोंमे से किसी एक राग में आरोह अवरोह के साथ बंदिश 8 अंक ।
अन्य एक राग का आरोह-अवरोह तथा बंदिश: 8 अंक ।
आरोह-अवरोह सुनकर राग पहचानना (1 राग) : 4 अंक
एक राग का आरोह अवरोह गाना 6 अंक ।
स्वर पहचानना : सारे, मय, धनि इस प्रकार अथवा सारेग, मपध, सानिध, इस प्रकार : 6 अंक ।

किसी एक ताल की जानकारी तथा दूसरे ताल का ठेका 4 अंक । शास्त्र (मौखिक) एक राग की संपूर्ण जानकारी : 6 अंक ।
एक राग का वादी संवादी 2 अंक, एक राग का समय और विकृत / वर्ज्यस्वर 2 अंक 4 अंक ।
कुल : 50 अंक ।

प्रवेशिका प्रथम वर्ष

गायन-वादन (स्वरवाद्य)

पूर्णांक: 75, न्यूनतम 26

क्रिया: 60 शास्त्र मौखिक 15

शास्त्र :

१) निम्नलिखित शब्दों की संक्षिप्त परिभाषाएँ: संगीत, ध्वनि, नाद, स्वर, शुध्द स्वर, विकृत स्वर (कोमल, तीव्र) वर्जित स्वर, सप्तक, मेल, अलंकार (पलटा), राग, जाति (ओड़व, षाड़व, संपूर्ण) वादी, संवादी, पकड़, आलाप, तान, स्वरमालिका (सरगम गीत) लक्षणगीत, स्थायी, अंतरा, लय (विलंबित, मध्य, द्रुत) मात्रा, ताल, विभाग, सम, खाली, दुगुन, ठेका, वर्जित स्वर, आवर्तन इन सभी पारिभाषिक शब्दों का वर्णन पाठ्यक्रम के राग तथा तालों के उदाहरण द्वारा स्पष्ट किया जाए।

२) पाठ्यक्रम के रागों का शास्त्रीय ज्ञान: रागों के मेल (थाट), स्वर, आरोह, अवरोह, पकड़, मुख्य स्वरसमुदाय, समय, जाति, वादी, संवादी, वर्जित स्वर आदि का विवरण।

३) स्वरलिपि के चिन्हों का प्रारंभिक ज्ञान ।

क्रियात्मक :

अ) स्वरज्ञान सात शुध्द स्वरों को गाना / बजाना, पहचानना । कोमल, तीव्र (विकृत) स्वरों को गाना / बजाना तथा राग के स्वरों की सहायता से उनको पहचानना । निम्नलिखित शुध्द स्वरों के पांच सरल अलंकार विलंबित तथा मध्य लय में गाना / बजाना तथा हर अलंकार का प्रयोग पाठ्यक्रम के किसी एक राग में करना।

१) सारे, रेग, गम, ... सानी, नीध, धप

२) सारेसा, रेगरे, गमग, ... सानीसा, नीधनी, धपध (दादरा ताल में)

३) सारेगसारेगम, रेगमरेगमप . . . . सांनीधसांनीधप, नीधपनीधपम (रूपक ताल में)

४) सागरेसा, रेमगरे, गपमग . . . . सांधनीसां, नीपधनी, धमपध (तीन ताल में)

५) साम, रेप, गध, ...साप, नीम, धग

आ) रागज्ञान :-

यमन, काफी, खमाज, भीमपलासी, बागेश्री, भूपाली, देस, दुर्गा

१) इन सभी रागों के आरोह अवरोह, पकड़ तथा प्रारंभिक - आलाप / स्वर विस्तार।

२) हर राग में मध्य लय का एक गीत अथवा गत।

३) इनमें से किन्हीं छह रागों में बंदिश / गत, आलाप / स्वरविस्तार, तान सहित अथवा गत तोड़ोंसहित पाँच मिनट तक गाने अथवा बजाने की तैयारी।

४) झपताल अथवा रूपक अथवा एकताल में एक गीत, दो सरगम गीत तथा दो लक्षण गीत, एक धुपद (दुगुनसहित) एक भजन इस प्रकार सात अतिरिक्त गीत पाठ्यक्रम के रागों में किये जाएँ। वादन के विद्यार्थियों के लिए त्रिताल के अतिरिक्त अन्य तालों में दो रचनाएँ, तथा एक धुन वाद्यानुकूल अलंकार विशिष्ट बोलों सहित किये जाएँ।

५) मुख्य रागदर्शक स्वरों द्वारा राग पहचानना ।

६) "वंदे मातरम्" और " जनगणमन" यह राष्ट्रगीत गाना- बजाना आवश्यक है।

इ) ताल - ज्ञान : एकताल, चारताल, झपताल की जानकारी तथा हाथ से ताल देकर बोलने का अभ्यास ।

अंकपत्रिका :

सूचना : इस परीक्षा के लिए हर एक विद्यार्थी को 15 मिनट का समय होगा। हर एक विद्यार्थी की परीक्षा अलग-अलग लेना आवश्यक है। हार्मोनियम का उपयोग केवल आधार स्वर (षड्ज पंचम /मध्यम) के लिये होगा। संगत करने की अनुमति केवल प्रथम राग गाते समय होगी। पूछे गए राग में आलाप तान के साथ बंदिश: 8 अंक तथा अन्य एक राग में तीन आलाप या 5 तान के साथ बंदिश: 7 अंक । कुल 15 अंक ।
एक अलंकार शुद्ध स्वरों में तथा एक किसी राग में: 6 अंक ।
धृपद या वाद्यानुकूल अलंकार ठाह तथा दुगुन में : 5 अंक ।
तीन ताल को छोड़कर अन्य में बंदिश: 5 अंक ।
लक्षण गीत, भजन, सरगम गीत, धुन, वन्दे मातरम् तथा जनगणमन इन में कोई तीन प्रकार 12 अंक ।
राग पहचानना (तीन राग) : 6 अंक ।
स्वर पहचानना सारेग, पधनि, गमप, मपनि, इस प्रकार दो स्वर समूह : 6 अंक।
दो तालों की जानकारी तथा हाथ से ताल देकर ठेका बोलना : 5 अंक ।
शास्त्र (गौखिक) :-

एक राग की जानकारी : 5 अंक।
किसी एक गीत / गत प्रकार या स्वर लिपि पद्धति की जानकारी :4 अंक
तथा अन्य तीन छोटी परिभाषाएँ: 6 अंक ।
कुल: 15 अंक ।
सर्व योग : 75 अंक ।

प्रवेशिका द्वितीय वर्ष

गायन - वादन (स्वरवाद्य)

पूर्णांक 125 (न्यूनतम 44)

क्रियात्मक : 75 न्यूनतम : 26 शास्त्र :50 न्यूनतम : 18

शास्त्र :

अ) प्रथम वर्ष की परिभाषाओं की विस्तृत पुनरावृत्ति । निम्नलिखित विषयों का साधारण ज्ञान:- भारतीय संगीत की दो मुख्य पध्दतियाँ- उत्तर भारतीय एवं दक्षिण भारतीय (कर्नाटक) संगीत पध्दतियाँ । नाद की तीन विशेषताएँ (छोटा बड़ापन, ऊँचा नीचापन तथा जाति अथवा गुण गान क्रिया अथवा वर्ण, (स्थायी, आरोही अवरोही और संचारी) ध्वनि-नाद- श्रुति स्वर की व्याख्याएँ तथा उनमें आपसी संबंध स्वर (शुध्द एवं विकृत), सप्तक, आरोह-अवरोह, जनक एवं जन्यराग तथा उनसे संबंधित ग्रह, अंश, न्यास स्वर पूर्वांग और उत्तरांग पूर्व-उत्तर राग, शुध्द, छायालग, संकीर्ण राग, वक्र स्वर, मींड, कंपन, स्पर्श स्वर, गमक घसीट इत्यादि। गीत के अवयव (स्थायी, अंतरा, संचारी तथा आभोग) ।

गीत के प्रकार :- ध्रुपद, धमार, ख्याल, (विलंबित) तथा द्रुत भजन (वाद्य के लिए मसीदखानी तथा रजाखानी गत) जहां संभव हो पाठ्यक्रम के राग तालों के उदाहरणों द्वारा विषय को स्पष्ट किया जाए। (इस प्रश्नपत्रिका में १० अंक के प्रश्न वस्तुनिष्ठ (ऑब्जेक्टिव्ह) होंगे।)

आ) पं. विष्णु नारायण भातखंडे तथा पं. विष्णु दिगंबर पलुस्कर की स्वरलिपियों के चिन्हों की पहचान तथा सौखे हुए गीतों को इन लिपियों में लिखने का अभ्यास प्रथम और द्वितीय वर्ष के सभी रागों का पूर्ण विवरण मेल (थाट), राग में लगनेवाले स्वर, वादी संवादी, समय, पकड़, प्रारंभिक आलाप लिखना इन रागों की समानता - विभिन्नता को उदाहरणों द्वारा स्पष्ट करना। लिखित स्वर समूह द्वारा राग पहचानना तथा पाठ्यक्रम के रागों में अलंकार (पल्टे) बनाना ।

दोनो वर्षों के तालों को लिपिबध्द करना : मात्रा, सम, खाली, ताली, विभाग, ठेका आदि लिखने की विधि का ज्ञान होना चाहिए। इन तालों को ठाह (बराबर) तथा दुगुन की लय में लिखने का अभ्यास । साधारण आलाप तान तोड़ोंसहित बंदिशों / गतों को स्वरलिपि में लिखने की क्षमता।

इ) पं. विष्णु दिगंबर पलुस्कर तथा स्वामी हरिदासजी की संक्षिप्त जीवनी और अखिल भारतीय गांधर्व महाविद्यालय मंडल इस संस्था का अल्प परिचय ।

ई)) वाद्य के विद्यार्थियों को अपने वाद्य के चित्र बनाकर उसके विभिन्न अंगो की जानकारी देना आवश्यक है।

क्रियात्मक :

अ) स्वर ज्ञान :

१) शुध्द स्वरों के गाने- बजाने तथा पहचानने में निपुणता । विकृत स्वरों - का समुचित ज्ञान। चार शुध्द स्वरों के समूह तथा तीन स्वरों के समूह को (जिसमें एक या दो स्वर विकृत हों) गाना / बजाना तथा पहचानना । ऐसे स्वरसमूह पाठ्यक्रम के रागों पर आधारित होंगे।

२) पहले सीखे हुए अलंकारों का द्रुतगति में अभ्यास तथा निम्नलिखित छह नये अलंकारों का विभिन्न लयों में अभ्यास तथा रागों में उनका प्रयोग करने की क्षमता ।

१) सागरेसा, रेमगरे .... साधनीसा, नीपधनी, धमपध,

२) सारेसाग, रेगरेम, गमगप.....सांनीसाध, नीधनीप, धपधम

३) सारेग रेगसारे, रेगम गमरेग. . . . . सांनीध नीधसांनी, नीधप धपनीध (रूपक ताल में)

४) सारेगरेसा, रेगमगरे, ... सोनीधनीसा नीधपधनी, (झपताल में)

५) सागगरे, रेममग, गपपम. . . . . . . सांधधनी, नीपपध

६) सारेगरेग रेगमगम सांनीधनीध, नीधपधप (एकताल के वजनसे)

आ) राम ज्ञान

१) प्रथम वर्ष के रागों की पुनरावृत्ति के साथ इस वर्ष यमन अथवा कल्याण और भूप राग के बड़े ख्याल / मसीतखानी गर्ने (केवल बंदिशे गाना / बजाना अपेक्षित है, विस्तार अपेक्षित नही है) इसके अतिरिक्त निम्नलिखित आठ राग सीखने हैं :-

१) अल्हैया बिलावल, २) वृंदावनी सारंग

३) भैरव, ४) बिहाग,

५) केदार, ६) तिलक कामोद,

७) आसावरी, ८) भैरवी।

२) इन रागों में आरोह अवरोह, प्रारंभिक आलाप, तथा एक मध्य लय का ख्याल / रजाखानी गत सीखनी है।

३) इनमें से भैरवी छोड़कर अन्य ७ रागों में मध्य लय के ख्याल / रजाखानी गत, आलाप, तान/ तोड़ों सहित १० मिनट तक गाने- बजाने की तैयारी।

४) इन आठ रागों में से किन्ही पांच रागों में एक धमार (दुगुन के साथ), एक तराना, सरगम गीत, एक लक्षण गीत तथा झपताल या रूपक में एक बंदिश - इस प्रकार अन्य गीत प्रकार सीखने हैं। सभी गीत प्रकार अलग अलग रागों में होने चाहिए। वादन के लिए -रूपक, झपताल तथा धमार में तीन रचनाएँ। झाले के तीन प्रकार तथा पूछे गए एक राग में आलाप । हार्मोनियम का प्रयोग केवल आधार स्वर (षड्ज, पंचम / मध्यम) के लिये ही किया जा सकता है।

५) मण्डल की प्रार्थना "जय जगदीश हरे" तथा एक भजन और एक लोकगीत सिखाए जाए। वादन के लिए एक लोकधुन, कृंतन, घसीट, एवं जमजमा बजाने की क्षमता ।

६) गाये / बजाए हुये आलापों द्वारा राग पहचानने की क्षमता।

इ) ताल लय ज्ञान :

१) तबले पर बजते हुए तालों को पहचानने का अभ्यास।

२) ठाह तथा दुगुन की लय हाथ से ताली देते हुए अंकों अथवा बोलों की सहायता से बोलना ।

३) विलंबित एकताल, चौताल, धमार, रूपक और तीनताल हाथसे ताली देकर दुगुनमें बोलना ।

अंकपत्रिका :

सूचना : हर एक परीक्षार्थी की परीक्षा अलग-अलग लेना आवश्यक है।परीक्षार्थी को तानपूरा या हार्मोनियम में षड्ज / पंचम / मध्यम लगाकर गाना चाहिये। हर एक विद्यार्थी की परीक्षा के लिए 20 मिनट का समय निर्धारित किया गया है।
यमन और भूपाली इन दोनों में से एक विलंबित ख्याल की बंदिश / गत गाना / बजाना। : 5 अंक ।

पूछे गए किसी एक राग में आलाप तान के साथ बंदिश : 8 अंक। इस वर्ष के अन्य राग में 2 आलापों के साथ बंदिश : 6 अंक।
तथा अन्य एक राग में 5 तानों / तोंड़ों के साथ बंदिश : 6 अंक।
कुल : 20 अंक।
धमार (बाध हो तो कोई गत या तालबद्ध अलंकार) वाह तथा दुगुन में :8 अंक ।
तराना / झाला तथा तीन ताल को छोड़कर अन्य ताल में बंदिश, इनमें से एक प्रकार : 5 अंक ।
इस वर्ष के दो अलंकार शुद्ध स्वर में : 6 अंक।
तथा उन में से एक संपूर्ण जाति के राग में : 4 अंक ।
कुल 23 अंक ।
प्रथम वर्ष के दो रागों में प्रारंभिक राग विस्तार के साथ बंदिश :10 अंक।
इस वर्ष के किसी एक ताल का ठेका वाह तथा दुगुन में : 5 अंक ।
ताल को समझकर बंदिश प्रारंभ करना : 4 अंक
कुल 9 अंक।
राग पहचानने के लिए इस वर्ष के दो तथा प्र. वर्ष के दो रागों के स्वर समूहों का प्रयोग करें : 8 अंक।
(कुल मौखिक : 75 अंक, लिखित : 50 अंक, सर्वयोग : 125 अंक)

मध्यमा प्रथम वर्ष

गायन वादन (स्वरवाद्य)

पूर्णांक : 200, न्यूनतम 70
क्रियात्मक: पूर्णांक 125 न्यूनतम 44, शास्त्र : पूर्णांक 75 न्यूनतम 26

सूचना : इस वर्ष की तथा आगे की सभी परीक्षाओं के लिए गायन के परीक्षार्थियों के साथ केवल तानपूरे का ही प्रयोग होगा।

शास्त्र :

प्रथम दो वर्षों के सभी विषयों को दोहराना आवश्यक है तथा उनकी विस्तृत परिभाषाओं की जानकारी होनी चाहिए। उसके अलावा निम्नलिखित विषयों का अध्ययन करना होगा। सात स्वरों में 22 श्रुतियों का विभाजन (आधुनिक मत), वादी स्वर का राग से संबंध, ध्वनि की उत्पत्ति, कंपन, आंदोलन की व्याख्या, आंदोलन की चौड़ाई और उसका नाद के छोटे बड़ेपन से संबंध, तार की लंबाई और आंदोलन संख्या तथा नाद के ऊँचे नीचेपन का पारस्पारिक संबंध। मेल (थाट) और राग के नियम । गणितानुसार हिंदुस्थानी संगीत में थाटों की रचना। पं. भातखंडे प्रणीत 10 थाटों की जानकारी। संधिप्रकाश राग स्वरसंख्या पर आधारित राग विभाजन (जातियाँ) । अब तक सीखे हुए रागों का विस्तृत विवरण तथा उनके आलाप लिखना । उनकी समानता - विभिन्नता सोदाहरण स्पष्ट करना । तानों के प्रकार सरल (शुद्ध), कूट, मिश्र, सपाट, वक्र । रागों की पकड़, उठाव, चलन आदि को स्पष्ट करना सीखे हुए सभी ध्रुपद धमार की दुगुन, चौगुन लिखना। पं. भातखंडे तथा पं. पलुस्कर स्वरलिपि पद्धतियों का संपूर्ण ज्ञान। किसी भी गीत को दोनों स्वरलिपियों में लिखने का अभ्यास।

संक्षिप्त जीवनियाँ स्व. पं. विष्णु नारायण भातखंडे, तानसेन, पं. बालकृष्णबुवा इचलकरंजीकर, पं. पन्नालाल घोष अथवा पं. शिवकुमार शर्मा, मसीदखाँ, रजाखाँ इन में से कुल तीन जीवनियाँ, उनके कार्य तथा जीवन की प्रमुख घटनाओं के साथ वाद्य के विद्यार्थियों के लिए ऊपर निर्दिष्ट विषयों के अलावा निम्नलिखित की जानकारी होनी चाहिए। गायकों/वादकों के गुण-दोष परिभाषाएँ अनुलोम विलोम, मींड, गमक, सूत, घसीट, जमजमा, मुर्की, छूट, वाथों के प्रकार तत, वितत, धन, सुषिर अपने वाद्य की विस्तृत जानकारी।

क्रियात्मक:

अ) स्वर ज्ञान:-

विकृत और शुद्ध स्वरों की समुचित पहचान शुद्ध, विकृत, मिश्रित, स्वर-समूहों के स्वरों को पहचानना तथा लिखित स्वर समूहों को गाना / बजाना। गले से अथवा वाद्य से कण, खटके, मुर्की निकालने का अभ्यास । वाद्य के विद्यार्थियों से एक स्वर पर दूसरा स्वर मींड से बजाना। कण तथा स्पर्श स्वर आदि का प्रयोग वाद्यविशेष के अनुसार अपेक्षित है। आलापों में मींड-गमक आदि का प्रयोग तथा अलंकारों को गाना / बजाना तथा उनका राग विस्तार में प्रयोग करने की क्षमता।

आ) राग ज्ञान :-

१) निम्नलिखित सभी रागों में एक विलंबित तथा एक द्रुत ख्याल / एक मसीदखानी तथा एक रजाखानी गत करनी है।

१) भूपाली २) कल्याण ३) बागेश्री ४) बिहाग

भूपाली, कल्याण (यमन), बागेश्री तथा बिहाग इन चारों रागों में गायकी अंग से १० मिनिट तक राग विस्तार, आलाप, तान/तोडे सहित गाने बजाने की क्षमता ।

२) निम्नलिखित रागों में मध्य लय की एक बंदिश / गत सात मिनिट आलाप, तान/तोड़ों सहित गाने बजाने की क्षमता ।

(१) जौनपुरी (२) मालकौंस (३) हमीर (४) पटदीप

(५) तिलंग (६) देसकार (७) कालिंगडा

३) उपरोक्त रागों का सम्पूर्ण परिचय अपेक्षित है।

४) क्रमांक २ में वर्णित रागों में एक ध्रुपद, एक धमार, (दुगुन, चौगुन के साथ) एक तराना तथा द्रुत एकताल में एक बंदिश – इस प्रकार कुल चार बंदिशें तैयार करनी हैं। वादन के विद्यार्थी अपने वाद्य की विशेषता के अनुसार इतनी ही गतें विभिन्न तालों में तैयार करेंगे। पाठ्यक्रम के सभी रागों में बंदिशे याद हों इस प्रकार विभाजन – किया जाए।

५) भजन / लोकगीत अथवा धुन गाना / बजाना सिखाया जाय।

इ) ताल ज्ञान :–

झूमरा, विलंबित एकताल, तिलवाड़ा, धमार, सूलताल के ठेके हाथ से ताली देकर बोलना तथा इनकी दुगुन करना। पहले सीखे हुए तालों में दुगुन, तिगुन, चौगुन करने का अभ्यास।

अंकपत्रिका :

सूचना :– इस परीक्षा लिए 35 मिनट का समय निर्धारित किया गया है। परीक्षार्थी को तानपूरे के आधार स्वर से ही गाना है। हार्मोनियम की संगत स्वीकार्य नहीं है। विलंबित तथा मध्यलय की बंदिशों के लिए 20 मिनिट का समय दे कर शेष समय में सभी कॉलम के प्रश्न पूछने हैं। हर कॉलम के प्रश्नों में अलग अलग रागों का प्रयोग करें; जिससे सभी पाठ्यक्रम जाँचा जा सके।
पूछे गए राग में विलंबित बंदिश आलाप तानों के साथ : 14 अंक। अन्य दो रागों में विलंबित बंदिशें दो आलाप के साथ : 8+8 अंक।
कुल अंक : 30 ।
इस वर्ष के नये रागों में से एक राग में आलाप तान के साथ मध्य लयकी बंदिश : 12 अंक। दूसरे राग में बंदिश 5 तानों के साथ : 8 अंक।
कुल : 20 अंक।
ध्रुपद या धमार की बंदिश ठाह तथा चौगुन में। स्वर वाद्य के लिए गत की बंदिश या तालबद्ध अलंकारठाह तथा चौगुन में 15 अंक।
तराना या द्रुत एकताल की बंदिश: 8 अंक।
उपशास्त्रीय प्रकार : 8 अंक।
इस वर्ष के तालों में से किसी एक ताल का ठेका ठाह तथा दुगुन में : 4 अंक। पिछले तालों में से एक ठेका ठाह तथा चौगुन में : 6 अंक।
कुल : 10 अंक।
राग पहचानना :– राग वाचक स्वर समूहों से, जिसमे दो राग इस वर्ष के तथा दो राग पिछले वर्ष के हो : 8 अंक।
स्वर पहचानना :– राग वाचक स्वर समूहों जिनमें से एक राग पिछले वर्ष का हो : 6 अंक।
पिछले एक राग की बंदिश : 4 अंक तथा दो रागों के राग वाचक आलाप : 3 +3 अंक।
कुल अंक : 10 |
स्वर लिपि पढ़ना (चार मात्रा की एक पंक्ति) : 10 अंक।
कुल : 125 अंक |
लिखित : 75, सर्वयोग : 200 अंक।

मध्यमा द्वितीय वर्ष

गायन वादन (स्वरवाद्य)

पूर्णांक: 250 न्यूनतम : 88

क्रियात्मक :150 न्यूनतम : 53, शास्त्र :100 ज्यूनतम : 35

शास्त्र :

१) पाठ्यक्रम के सभी रागों का विस्तृत विवेचन तथा सोदाहरण समानता - विभिन्नता का अध्ययन स्वर समुदाय से राग पहचानना और स्वर विस्तार करना।
२) पहले वर्ष से अबतक के सभी तालों का विस्तृत अध्ययन एवं उन्हे पं. विष्णु दिगंबर एवम् पं. भातखंडे स्वरलिपिमें लिखने का अभ्यास ।
३) पाठ्यक्रम के सभी तालों की दुगुन चौगुन दोनों स्वरलिपियों में लिखने की क्षमता।
४) पाठ्यक्रम में सीखी हुई सभी बंदिशों को दोनों स्वरलिपियों मेंस्वरलिपिबद्ध करने की क्षमता ।
५) निम्नलिखित पारिभाषिक शब्दों का विस्तृत अध्ययन ।
   नाद, श्रुति, स्वरस्थान, सप्तक, अष्टक, पूर्वांग उत्तरांग वर्ण, अलंकार, वादी संवादी, अर्ध्वदर्शक स्वर, समप्रकृतिक राग, प्रबंध, वस्तु, रूपक, ग्रह, अंश, न्यास।
६) आधुनिक एवम् प्राचीन राम लक्षण, जातिगायन, सन्यास, विन्यास, अपन्यास, अल्पत्त्व बहुत्त्व, आविर्भाव तिरोभाव, गायकी - - नायकी इसका परिचय ।

संगीतज्ञों की जीवनी :- गोपालनायक, अमीर खुसरो, मानसिंह तोमर,

जयदेव, त्यागराज, तानसेन, पुरंदरदास,

प्राचीन मूल सप्तक में 22 श्रुतियों का भरत के अनुसार सात स्वरों मे विभाजन ।
गायकों के गुणदोष के बारे में 'संगीत रत्नाकर' मे दिये विचारों की विस्तृत जानकारी।

निम्नलिखित विषयोंपर निबंध लिखने की क्षमता :-

१) शास्त्रीय संगीत और लोकसंगीत

२) संगीत विकास में विज्ञान का सहयोग

३) साहित्य और संगीत

४) जीवन में संगीत का महत्त्व

क्रियात्मक :

अ) स्वरज्ञान :-

१) तानपूरा अपने स्वर में मिलाने की क्षमता। तानों की विशेष तैयारी। राग का समुचित विकास करने की क्षमता। रागों का शुद्ध स्वरूप प्रस्तुत करना। आलाप, बोलआलाप के साथ बढ़त करना। तबला सुर में मिलाने का साधारण ज्ञान / ठेका बजाने का साधारण ज्ञान ।

आ) रागज्ञान :-

२) निम्नलिखित छह रागों में विलंबित ख्याल (दो अलग तालों में) तथा द्रुत ख्याल / मसीतखानी और रजाखानी गत । रागों का मुखड़ा अच्छी तरह से पकड़ने की क्षमता होना तथा हर एक राग का पंद्रह मिनट तक विस्तार करना अनिवार्य है।

(१) भीमपलासी, (२) वृंदावनी सारंग, (३) केदार,

(४) जौनपुरी, (५) मालकंस, (६) भैरव

सामान्यज्ञान के लिये छह राग दिये हैं। इन सब रागों में एक एक बंदिश अथवा रजाखानी गत आलाप तान/तोड़ों के साथ प्रस्तुत करना आना चाहिये।

(१) शंकरा (२) जयजयवंती (३) गौड़सारंग

(४) पूरिया धनाश्री (५) कामोद, (६) छायानट

३) उपरिनिर्दिष्ट रागों में एक धृपद, एक धमार दुगुन, तिगुन, चौगुन में गाने की क्षमता वादन के विद्यार्थी अपने वाद्य की विशेषता के अनुसार तीव्रा, आड़ाचौताल में इतनी ही गर्ने तैयार करें।

४) पाठ्यक्रम के रागों में से किन्ही दो रागों में तराने / द्रुतगर्ते प्रस्तुत करना।

५) 'जयजगदीश हरे' यह मंडल की प्रार्थना गाने / बजाने की क्षमता।

६) एक भजन, एक गज़ल, एक देशभक्तिपर गीत, एक लोक गीत / धुन प्रस्तुत करने की क्षमता।

इ) तालज्ञान :-

रूपक, दीपचंदी, चौताल की दुगुन बोलना। अंकों की सहायता से 2 में 3, 3 में 2 बोलने की क्षमता अथवा किसी एक ताल को दूसरे तालों में रूपांतरित करने की क्षमता।

अंकपत्रिका :

सूचना : इस परीक्षा के लिए 40 मिनट का समय निर्धारित किया गया है। आधार स्वर के लिए तानपुरा ही लेना अनिवार्य है। हार्मोनियम की संगत स्वीकार्य नहीं है। हर एक कॉलम में अलग अलग राग पूछे जाएँ, जिससे पूर्ण पाठ्यक्रम जाँचा जा सके।

विलंबित बंदिशें :-

तीन पर्यायी रागो में से किसी एक राग में बंदिश आलाप तानों के साथ (सात मिनट) 14 अंक । इस वर्ष के एक अन्य राग में दो आलाम या तानों के साथ बंदिश : 8 अंक इस वर्ष के एक अन्य राग में तथा पिछले एक राग में केवल बंदिश रागवाचक आलाप के साथ : 4+4 अंक। कुल अंक

मध्यलय की बंदिशें :-

इस वर्ष के एक राग में संपूर्ण विस्तार के साथ बंदिश (पाँच मिनट) 10 अंक । अन्य एक राग में दो आलाप तथा पाँच तानों के साथ बंदिश: 8 अंक पिछले राग में तीन आलाप के साथ बंदिश: 7 अंक कुल 25 अंक ।

धृपद, धमार :-

धृपद, धमार (वाद्य हो तो तत्सम गत तालबद्ध अलंकार तथा ठाह में) : 6 अंक । स्थाई या अंतरे की अथवा अलंकार की चौगुन 9 अंक । कुल 15 अंक ।

अन्य बंदिशे :-

इस वर्ष के रागों में तराना तथा द्दत एकताल की बंदिश / गत, इनमें से एक प्रकार : 10 अंक ।

उपशास्त्रीय गीत प्रकार :-

उपशास्त्रीय संगीत के अंतर्गत कोई एक गीत प्रकार या धुन : 10 अंक ।

ताल लय ज्ञान :-

इस वर्ष के दो ठेकों को ताली खाली देकर बोलना 4 अंक । इन में से एक की तिगुन करना 3 अंक एक की चौगुन करना 3 अंक एक विलंबित तथा एक मध्य लय का ठेका पहचानना 4 अंक । अंको की सहायता से 2 में 3 तथा 3 में 2 बोलना : 6 अंक । कुल 20 अंक ।

रागविस्तार :– इस वर्ष के दो तथा पिछले वर्ष के तीन रागों के आलाप 20 अंक ।

राग पहचान :– इस वर्ष के दो तथा पिछले वर्ष के तीन राग 10 अंक

स्वरलिपि पढ़ना :– चार मात्रा की पंक्ति, जिस में एक, आधी तथा पाव मात्रा के चिन्ह हों और तालबद्ध सरगम गीत हार्मोनियम पर बजाना तथा गाना 10 अंक।

कुल मौखिक 150 अंक ।
लिखित 100 अंक ।
सर्वयोग 250 अंक।

विशारद प्रथम वर्ष

गायन-वादन (स्वरवाद्य)

पूर्णांक: 400, न्यूनतम 180
क्रियात्मक : 250 (किया: 200 + मंच प्रदर्शन: 50) न्यूनतम 128
शास्त्र 150 न्यूनतम 52.

शास्त्र :-
प्रपत्र सं. १

१) पाठ्यक्रम के सभी रागों का विस्तृत विवेचन तथा सोदाहरण समानता विभिन्नता का अध्ययन स्वर समुदाय से राग पहचानना।

२) पाठ्यक्रम की निम्नलिखित सभी तालों का विस्तृत अध्ययन एवम् उन्हें पं. विष्णू दिगंबर एवम् पं. भातखंडे पद्धति में लिखने का अभ्यास । दुगुन तिगुन चौगुन लयकारी में लिखने का अभ्यास ।

(१) आड़ाचौताल, (२) झूमरा,

(३) दीपचंदी, (४) पंजाबी

३) पाठ्यक्रम के रागों की बंदिशों को / गतों को विष्णु दिगंबर एवम् भातखंडे स्वरलिपि पद्धति में लिखने की क्षमता।

४) आधुनिक आलाप गान एवम् प्राचीन आलाप गान की विधि का विस्तृत विवेचन ।

५) तानों के प्रकार और उनका विस्तृत अध्ययन ।

६) निबद्ध गान के विविध प्रकारों का पूर्ण विवेचन ।

धृपद, धमार, तराना, टप्पा, ठुमरी, ख्याल ।

प्रश्नपत्र सं. २

७) गणित के आधार पर पं. व्यंकटमखी के 72 मेलों की रचना की विधि ।

८) थाट पद्धति का प्राचीन से आधुनिक काल तक का विवेचन तथा थाट पद्धति के गुणदोष ।

९) रागों का समय-चक्र और रागों के विभाजन के तीन वर्गों की विस्तृत जानकारी ।

१०) गायक / वादकों का सांगीतिक योगदान :- अल्लादिया खाँ, विनायकराव पटवर्धन, श्री. ना. रातंजनकर, अल्लाउद्दीन खाँ, ओंकारनाथ ठाकुर, निखिल बॅनर्जी, बालकृष्णबुवा इचलकरंजीकर, बिसमिल्ला खाँ ।

११) निम्नलिखित विषयों में निबंध लिखने की क्षमता :-

१) ललित कलाओं में संगीत का स्थान।

२) चित्रपट (चलचित्र) संगीत पर शास्त्रीय संगीत का प्रभाव ।

३) शास्त्रीय संगीत कल, आज और कल ।

४) शास्त्रीय संगीत में बंदिशों का महत्त्व ।

१२) भारतीय वाद्यों का वर्गीकरण।

क्रियात्मक :

१) इस वर्ष में ख्यालगायन/वादन की शैली में विकास होना अपेक्षित है ।

२) राग का अपने मन से आलाप तानों द्वारा विस्तार करना अपेक्षित है ।

३) अल्पत्त्व बहुत्त्व तथा अविर्भाव तिरोभाव का गायन वादन में प्रयोग करना अपेक्षित है ।

अ) रागज्ञान :

विस्तृत अध्ययन के लिए :

(१) गौडसारंग, (२) शंकरा, (३) जयजयवंती,

(४) पूरियाधनाश्री, (५) हमीर, (६) कामोद

हर एक राग में एक -एक विलंबित तथा एक-एक द्रुत ख्याल / एक – एक मसीतखानी तथा एक-एक रजाखानी गत तैय्यार करनी है।

साधारण ज्ञान के लिए :

(१) मियाँ मल्हार (२) मुलतानी (३) मारुबिहाग

(४) पूरिया (५) शुद्ध कल्याण (६) दरबारी कानडा

(७) बहार

हर एक राग में मध्य लय की बंदिशें / गतें 15 मिनट तक आलाप तान/ तोड़ों सहित गाने/बजाने की क्षमता होनी चाहिए।

इस वर्ष के रागों में एक ध्रुपद, एक धमार, दो तराने तथा एक चतुरंग या त्रिवट इस प्रकार 5 अन्य बंदिशे तैय्यार करनी है। वादन के विद्यार्थी इनकी रचनाएँ विभिन्न तालों में तैय्यार करेंगे रूपक झपताल, एकताल, आड़ा चौताल, दीपचंदी।

उपशास्त्रीय संगीत के लिए इस वर्ष कोई एक प्रकार तैय्यार करना है। पीलू, भैरवी, या जोगिया में ठुमरी, दादरा या तत्सम कोई प्रकार प्रादेशिक भाषा में।

गायन वादन की अंकपत्रिका के कॉलम में 10 अंक राष्ट्रगीत, जनगणमन, वंदेमातरम् हार्मोनियम पर बजाना तथा गाना इसके लिए समाविष्ट किये गए हैं।

आ) तालज्ञान :

आडाचौताल, दीपचंदी, अध्दा (तीनताल) धुमाली, चाचर अथवा झपताल का संपूर्ण ज्ञान तथा इनको तबले पर बजते हुए पहचानना । सर्वसाधारण ठेकों को तबले पर बजाने का अभ्यास। अब तक सीखे हुए तालों की दुगुन, तिगुन, चौगुन बोलने का अभ्यास ।

अंकपत्रिका :-

सूचना :- इस परीक्षा के लिए 50 मिनट का समय निर्धारित किया गया हैं। संपूर्ण विस्तार के साथ प्रस्तुत की जानेवाली विलंबित बंदिशों के लिए 7-7 मिनट तथा मध्यलय की बंदिशों के लिए 5-5 मिनट समय देकर शेष समय में सभी कॉलम के प्रश्न पूछे जाएँ। हार्मोनियम की संगत स्वीकार्य नही है।

इस वर्ष के दो रागों में एक बंदिश संपूर्ण विस्तार के साथ: 13 + 13 अंक। इस वर्ष के दो तथा पिछले वर्ष के एक राग में राग वाचक आलाप के साथ केवल बंदिशें, 8+8+8 अंक। कुल 50 अंक ।

इस वर्ष के दो रागों में संपूर्ण विस्तार के साथ एक एक बंदिश, 9+9 अंक। इस वर्ष के दो रागों में तथा पिछले वर्ष के एक राग में राग वाचक आलाप के साथ बंदिश 4+4+4 अंक। कुल 30 अंक

इस वर्ष निर्धारित किये गये रागों में धृपद, धमार या तत्सम गत अथवा तालबद्ध अलंकार ठाह में: 4 अंक। चौगुन में :5 अंक । तथा तिगुन में: 7 अंक । कुल 16 अंक ।

देशकार भूपाली, जौनपुरी दरबारी कानडा, छायानट-कामोद देस- तिलक कामोद इन में से दो राग जोड़ियों की आलाप तानों के साथ तुलना :24 अंक।

इस वर्ष के रागों में तराना, चतुरंग, त्रिवट, या रूपक, झपताल, एकताल में गत 10 अंक ।
इस वर्ष के तीन तथा पिछले दो रागों के आलाप तथा तान: 20 अंक।
दो तालों के ठेकों को तबले पर बजते हुए पहचानना: 6 अंक ।
इस वर्ष के दो तालों की जानकारी तथा ठेकों को ताली खाली दे कर बोलना : 6 अंक ।
किसी ताल का ठेका चौगुन, तिगुन, तथा डेढगुन में ताली देकर बोलना :
3+4+6 अंक । कुल 13 अंक ।

पीलू, भैरवी या जोगिया में ठुमरी, दादरा या नाट्य संगीत / वाद्यों पर इस अंग की धुन: 15 अंक ।
बंदिश की पंक्ति सुन कर स्वर बोलना तथा लिखना, स्वरलिपि में बोलना तथा लिखना । अथवा राष्ट्रगीत जनगणमन, वन्देमातरम् हार्मोनियम पर बजाना तथा गाना :10 अंक ।

मंच प्रदर्शन : 50 अंक ।

(इस वर्ष के रागों में से एक राग और उनशास्त्रीय संगीत 20 से 30 मिनिट तक प्रस्तुति।)

कुल मौखिक : 250 अंक । लिखित : 150 अंक

सर्वयोग : 400 अंक।

विशारद द्वितीय वर्ष

गायन – वादन (स्वर वाघ)

पूर्णांक : 400, न्यूनतम : 180
क्रियात्मक : 250 (क्रिया : 200 + मंच प्रदर्शन: 50) न्यूनतम : 128
शाखा : 150 न्यूनतम : 52

प्रथम प्रश्न पत्र

पूर्णांक: 75, न्यूनतम : 26

शास्त्र :-

१) पाठ्यक्रम के सभी रागों का विस्तृत विवेचन तथा सोदाहरण समानता विभिन्नता का अध्ययन। स्वर समुदाय से राग को पहचानना तथा राग का विस्तार लिखना।

२) पाठ्यक्रम के सभी तालों का विस्तृत अध्ययन एवम् उन्हें विष्णु दिगंबर और भातखंडे पद्धति में लिखने की क्षमता । पाठ्यक्रम के तालों की दुगुन, तिगुन, चौगुन लयकारी लिखने की क्षमता ।

३) निम्नलिखित विषयों का विस्तृत अध्ययन:- मार्गीसंगीत, देशीसंगीत, स्वस्थान नियम, गंधर्वगान, कुतम वृंदगान ।

४) शुद्ध, छायालय सं (रागवर्गीकरण) पद्धति। परमेल प्रवेशक राम, दशविध राग वर्गीकरण पद्धति (संगीत रत्नाकर के अनुसार)

५) वर्तमान काल के दो प्रसिद्ध गायकों की / वादकों की गायन, वादन शैलियों का परिचय ।

६) मध्यकालीन एवम् आधुनिक स्वर स्थापना वीणा के तार पर मध्यकालीन एवम् आधुनिक संगीतज्ञों के स्वर स्थानों की तुलना । तार की लंबाई की सहायता से आन्दोलन संख्या के आधार पर तार की लंबाई निकालना ।

७) स्वर का विकास (प्राचीन से आधुनिक काल तक) ।

८) प्राधात्य संगीत के निम्नांकित सिद्धांतों का सामान्य अध्ययन

Vibrations, Frequency, Duration, Interval, Scale, Natural,

Tampered Octave, Major tone, Minor tone, Semi Tone.

९) संगीत के घरानों का संक्षिप्त इतिहास ।

१०) सारणा चतुष्टी के भरत एवम् शानिदेव द्वारा किये प्रयोगों का विवेचन ।

११) कर्नाटक संगीत के स्वर, ताल, राग का सामान्यज्ञान तथा उ. भारतीय संगीत से तुलनात्मक अध्ययन।

द्वितीय प्रश्न पत्र

पूर्णांक 75, न्यूनतम 26

१) तानपूरे से निर्माण होनेवाले सहायक (सांध्वनिक) नादों का विश्लेषणात्मक विस्तृत अध्ययन ।

२) कलावंत, पंडित, वाग्गेयकार, गीति, धृपद की बानियाँ एवम् गमक के प्रकार (टिप्पणी लिखिए) ।

३) संगीत विषयों पर निबंध :-

१) संगीत की वर्तमान समस्याएँ

२) रस और लय संबंध

३) महफिल का आयोजन

४) गुरुशिष्य परम्परा एवम् आधुनिक शिक्षा पद्धति ।

४) संगीत के निम्नलिखित ग्रंथकारों का योगदान :-

(१) भरतमुनि (२) शांगदेव (३) मतंग

(४) रामामात्य (५) अहोबल (६) आचार्य बृहस्पति

(७) ठाकुर जयदेव सिंग

निम्नलिखित विषयों का अध्ययन :-

१) रवींद्र संगीत का विस्तृत अध्ययन ।

२) हवेली संगीत की परंपरा ।

३) स्वरलिपि पद्धति का क्रमिक विकास और गुणदोष ।

४) फिल्मी संगीत और संगीतकार, पार्श्वगायन, ध्वनिमुद्रण, काव्य और संगीत ।

५) वृंदवादन रचना के नियम ।

६) प्राचीन प्रबंध गायन के नियम और प्रबंधों के प्रकार ।

७) पाश्चात्य नोटेशन पद्धति का साधारण ज्ञान ।

क्रियात्मक :

- सभा में गाने / बजाने का अभ्यास तथा उसमें निपुणता प्राप्त करना इस वर्ष अपेक्षित है। रागों का सूक्ष्म परिचय, संगीत के विभिन्न विषयोंपर (क्रिया और शास्त्र) मौलिक विचार तथा उनको समझने और समझाने की योग्यता विद्यार्थी में होनी चाहिये अपना वाद्य मिलाने की क्षमता अपेक्षित है। विद्यार्थी को संगीत सभा आयोजन तथा संचालन का भी प्रत्यक्ष अनुभव होना चाहिये।

स्वरज्ञान :-

- गाई / बजाई हुई अथवा स्वरलिपिबद्ध किसी भी स्वररचना को आत्मसात् करने की योग्यता सुनी हुई अथवा सीखी हुई रचना की स्वरलिपि मूल रूप में तथा गायकी अंग में परिवर्तित करने की क्षमता।

रागज्ञान :-

- रागों की प्रकृति का सूक्ष्म अध्ययन, उनमें स्वतंत्रता से विचरण, नई स्वररचनाएँ बनाना, (सरगम, गत / गीत तथा वृंदबादन) आविर्भाव, तिरोभाव, गमक, मीड, आंदोलन आदि का विस्तार से रसानुकूल समुचित प्रयोग करने का अभ्यास।
- निम्नलिखित सभी रोगों में एक एक विलंबित ख्याल तथा एक-एक द्रुत ख्याल / एक-एक मसीदखानी गत तथा एक- एक रजाखानी गत तैयार करती है। दिलंबित ख्याल विविध तालों में तैयार करना अनिवार्य है। हर एक राग २० से ३० मिनिट तक गाने बजाने की क्षमता अपेक्षित है। वादन के लिए, विलंबित गत संपूर्ण विस्तार के साथ भीड, घसीट, जमजमा, कृतन व सूत इत्यादि (वाद्य विशेष के अनुसार), झाले के विभिन्न प्रकार एवं तैयारी। -
- राग : विस्तृत अध्ययन के लिए :-

१) मियाँ मल्हार, २) मुलतानी ३) मारुबिहाग,

४) पूरिया, ५) शुद्धकल्याण, ६) दरबारी कानडा

साधारण ज्ञान के लिए :-

१) बिभास, २) ललित, (३) तोड़ी

४) बसंत, ५) सोहनी, ६) हिंडोल, (७) मारवा

- साधारण ज्ञान के रागों में मध्यलय की बंदिशें / गर्ने १५ मिनिट तक आलाप तानों सहित / तोड़ों सहित गाने बजाने की क्षमता।
- इस वर्ष के किसी राग में एक ध्रुपद, एक धमार दुगुन, तिगुन, चौगुन के साथ, दो तराने, एक त्रिवट इस प्रकार ५ अन्य बंदिशें अलग अलग रोगों में तैयार करनी है। वादन के लिए अपने वाद्य पर दुगुन, तिगुन तथा चौगुन लय बजाने का अभ्यास, वादन के विद्यार्थी इतनी ही रचनाएँ विभिन्न तालों में तैयार करें।
- उपशास्त्रीय संगीत में ठुमरी, दादरा या तत्सम अन्य कोई प्रकार (किसी प्रादेशिक भाषा में) तैयार करना है ।

तालज्ञान :-

- अभी तक सीखे हुए सब तालों का संपूर्ण परिचय तथा उनको हाथ से ताली देकर बोलना तथा विभिन्न लयकारियों में बोलना। हाथ से ताली देकर बंदिश गाने की क्षमता।

अंकपत्रिका :-

सूचना : इस परीक्षा के लिये एक घंटे का समय निर्धारित किया गया है। इसके अतिरिक्त 25 मिनट का मंच प्रदर्शन अलग से श्रोताओं के सामने (संगीत सभा की तरह) होगा। मंच प्रदर्शन में विशारद द्वितीय वर्ष के पाठ्यक्रम के रागों में से किसी एक राग में विलंबित तथा मध्यलय की बंदिश संपूर्ण विस्तार के साथ प्रस्तुत करनी होगी। परीक्षार्थी चाहे तो इसके बाद (समय रहा तो) उपशास्त्रीय संगीत की रचना भी प्रस्तुत कर सकता है। गायन के परीक्षार्थी चाहे तो ताल वाद्य के साथ-साथ स्वर वाद्य की संगत भी (केवल मंच प्रदर्शन में) ले सकते हैं।

संपूर्ण विस्तार के साथ पूछी गई बंदिशों के लिए 7-7 मिनट तथा मध्यलय की बंदिशों के लिए 5-5 मिनट समय दे कर शेष समय में सभी कॉलम के प्रश्न पूछना है।

वाद्य मिलाना : तानपुरा तथा अपना वाद्य स्वर में मिलाने की क्षमता: 15 अंक ।

विलंबित बंदिश : इस वर्ष के एक राग में संपूर्ण विस्तार के साथ बंदिश 16 अंक । तथा अन्य दो रागों में अलग अलग तालों में ३-३ आलापों के साथ बंदिश: 10 + 10 अंक । इस वर्ष के अन्य एक राग में तथा पिछले एक राग में राग वाचक आलाप के साथ केवल बंदिश : 7+7 अंक ।

कुल 50 अंक ।

मध्यलय की बंदिशें: इस वर्ष के एक राग में संपूर्ण विस्तार के साथ बंदिश 10 अंक तथा अन्य दो रागों में ३ आलाप तथा ५ तानों के साथ

बंदिशे ६ + ६, इस वर्ष के अन्य एक राग में तथा पिछले एक राग में राग वाचक आलाप के साथ केवल बंदिश : 4 + 4 अंक ।

कुल 30 अंक ।

धृपद धमार: धृपद धमार या तत्सम गत की बंदिश : 4 अंक ।

उस के स्थाई अंतरे की चौगुन : 5 अंक तथा डेढगुन 6 अंक नौम तोम के आलाप जोड, 5 अंक।

कुल 20 अंक ।

अन्य गीत प्रकार : इस वर्ष के रागों मे तराना, त्रिवट, तथा झाला (इन में से कोई एक प्रकार) :7 अंक

अलग अलग तालों में बंदिशें तीन ताल को छोड़ कर अन्य ताल में एक बंदिश ३ आलाप तथा 5 तानों / तोड़ों के साथ कुल 10 अंक ।

राम स्वरूप : पुरिया-मारवा, बसंत पूरिया धनाश्री, केदार कामोद, मियामल्हार-बहार, इन में से दो समूहों के राग स्वरूप को आलाप तथा तान अंगों के साथ स्पष्ट करना 18 अंक ।

उपशास्त्रीय: इस वर्ष निर्धारित किये गये समों में उपशास्त्रीय संगीत का कोई एक गीत प्रकार 10 अंक ।

ताल ज्ञान : तबले पर बजते हुए एक विलंबित तथा एक मध्य लय का ठेका पहचानना, 5 अंक सभी गीत प्रकारों की बंदिशें ठेका समझकर शुरू करने की क्षमता 8 अंक । किसी ताल का ठेका हाथ से ताली खाली दे कर तिगुन तथा डेढगुन में बोलना : 3+4 अंक ।

कुल 20 अंक ।

नोटेशन : बंदिश की पंक्ति को सुनकर उस की स्वरलिपि लिखना तथा वह गा कर बताना और देशभक्तिपर गीत हार्मोनियमपर बजाना तथा गाना : 20 अंक ।

इस वर्ष के रागों में से एक राग और उपशास्त्रीय अथवा सुगम संगीत 20 से 30 मिनिट तक प्रस्तुति-मंच प्रदर्शन: 50 अंक ।

कुल क्रियात्मक : 250 अंक ।
लिखित : 150 अंक।
सर्वयोग : 400 अंक ।

अलंकार (प्रथम वर्ष)
गायन वादन (स्वरवाद्य)

पूर्णांक- 500, न्यूनतम : 225
क्रियात्मक : 300 (क्रिया: 200 मंच प्रदर्शन 100) न्यूनतम 155 शास्त्र : 200, न्यूनतम 115

प्रथम प्रश्न पत्र
पूर्णांक 100 न्यूनतम 35

क्रियात्मक शास्त्र :

१) पाठ्यक्रम (अलंकार प्रथम वर्ष) के सभी रागों का विस्तृत विवरण। उनके सम्बन्ध में उपलब्ध मतभेदों की चर्चा, समप्रकृतिक रागों का तुलनात्मक अध्ययन रागों के लक्षण तथा रागों में स्वर लगाव का महत्त्व।

२) नवीन बंदिशों की रचना करना एवं बंदिशों को स्वरलिपि में लिखने की क्षमता।

३) भारतीय संगीत में स्वरलिपि पद्धतियों का इतिहास तथा उनका तुलनात्मक विवेचन।

४) अलंकार प्रथम वर्ष के रागों मे मुक्तालाप (खुला आलाप) तानें, बोल तान एवं तिहाईयों की रचना।

५) पाश्चात्य स्वरलिपि पद्धति का विस्तृत अध्ययन।

६) संगीत के विभिन्न गीत प्रकार एवं वादन शैलियों का समुचित ज्ञान।

७) रागांग वर्गीकरण के आधार पर निम्नांकित रागांगों का विस्तृत विवेचन :-

कल्याण, बिलावल, भैरव, काफी, सारंग, बिहाग एवं मल्हार।

८) संगीत की उत्पत्ति एवं विकास के सम्बन्ध में भारतीय एवं पश्चिमी मत।

९) पाठ्यक्रम के तालों को कठिन लयकारियों में लिखने का अभ्यास।

द्वितीय प्रश्न पत्र

पूर्णांक –100, न्यूनतम : 35

संगीत सौन्दर्य, इतिहास एवं प्रदर्शन कला :

१) वैदिक संगीत, रामायण, महाभारत, पुराण, प्रातिशाख्य एवं शिक्षाओं में संगीत।

२) भरत, मतंग, एवं शार्ङ्गदेव कालीन संगीत।

३) रस की परिभाषा, भरत एवं अभिनव गुप्त के अनुसार रस के प्रकार।

४) संगीत का रस के साथ सम्बन्ध' इस विषय में प्राचीन सिद्धांत एवं स्वर रस, लय रस, रागरस तथा छंद रस का विशद विवेचन।

५) कला एवं सौन्दर्य के सम्बन्ध में (पश्चिमी / भारतीय / पौर्वात्य) दर्शन का साधारण ज्ञान।

६) संगीत कला मंच प्रदर्शन की आवश्यकता, प्रदर्शन के लिये आवश्यक बाह्य परिस्थितियाँ, प्रदर्शन की परिस्थिति में हुये परिवर्तन, श्रोताओं की रुचि में परिवर्तन संगीत सभा के स्वरूप में परिवर्तन (महफिल, संगीत सम्मेलन, रेडिओ कार्यक्रम आदि के सम्बन्ध में)

७) मंच प्रदर्शन के सम्बन्ध में आंतरिक परिस्थिति बंदिशों का संग्रह संगत का चुनाव, कार्यक्रम के लिए रचनाओं का चुनाव, पसंदगी, व्यवहार का ढंग, वेशभूषा, समय का निर्धारण आदि ।

८) घराना उसका स्वरूप, ऐतिहासिक जानकारी, घरानों के प्रमुख कलाकारों की गायकी की समालोचना, तथा घरानों की आवश्यकता सम्बन्धी विवेचन

९) i) ध्वनि शास्त्र Acoustics

ii) आदर्श सभागृह का ध्वनिशास्त्र

अलंकार (प्रथम वर्ष)

गायन – वादन (स्वरवाद्य)

क्रियात्मक :

अलंकार प्रथम वर्ष के लिये नये कुल आठ राग रखे गये हैं जिनमें विलंबित और द्रुतलय की रचनाओं के साथ आधा पौन घन्टे गाने / बजाने की क्षमता विद्यार्थी में होनी चाहिए। मंच प्रदर्शन के लिए विद्यार्थी इच्छानुसार इस वर्ष के रागों में से कोई राम चुन सकता है, तथा एक ठुमरी, भजन अथवा ललित शैली की कोई भी रचना चुन सकता है। विस्तृत अध्ययन के रागों में विलंबित और द्रुत रचना के साथ पूर्ण विस्तार अपेक्षित है। इसके अलावा इन रागों में रचना वैचित्र्य आदि का ध्यान रखकर अतिरिक्त बन्दिशों का अच्छा संकलन विद्यार्थी करना चाहिए। जिसमें ध्रुपद, धमार, तराने, चतुरंग, त्रिवट, विविध ताली की बन्दिशें आदि को समुचित प्रतिनिधित्व प्राप्त हो। धृपद, धमार विस्तृत तथा साधारण रागों में से होना चाहिए। गायन–वादन की विभिन्न शैलियों को प्रदर्शित करने वाली कुछ रचनाएँ भी संग्रहित करनी चाहिए। सभी प्रचलित तालों के ठेके विभिन्न सकारियों (दुगुन, तिगुन, चाँगुन, डेगुन, सवागुन आदि) में बोलने का अभ्यास होना चाहिए। स्वरलिपि करने तथा पढ़ने में विशेष योग्यता तुरन्त नई स्वर रचना बनाने का अभ्यास । –

- **राग :–**

विस्तृत अध्ययन के लिए –

१) शामकल्याण   २) अहीर भैरव

३) पूरिया कल्याण   ४) तोडी

५) शुध्द सारंग   ६) मधुवंती

७) नंद   ८) गोरख कल्याण

- मंडल की प्रथम तीन चार परीक्षाओं में जो मूल रागों की केवल बंदिशें और प्राथमिक स्वरुप की गायकी होती है, उन्ही मूल रागों में – कुछ सालों के बाद अलंकार – प्रथम में विद्यार्थी अपने घराने की विशिष्ट अगप्रधान गायकी का प्रयोग कर सके इसी उद्देश्य से इस वर्ष भूल रागों में परिपूर्ण गायन अपेक्षित है। इससे कलाकार का व्यक्तित्व परकर सामने आयेगा। मूल रागों में से किन्ही पाँच रागोंको तैय्यार करना है।

- **मूल राग :–** (१) अल्हैय्या बिलावल   (२) भैरव

(३) जौनपुरी   (४) मारवा

(५) भीमपलासी   (६) यमन

(७) बिहाग   (८) मालकंस

- **साधारण ज्ञान के लिए निम्नलिखित राग :–**

(१) जोग   (२) मधमाद सारंग

(३) कलावती   (४) गौड मल्हार

(५) देवगिरी बिलावल   (६) रामकली

(७) हंसध्वनी   (८) बिहागडा

अंकपत्रिका :

सूचना : इस परीक्षा के लिए डेढ़ घंटा समय निर्धारित किया है। इस के अतिरिक्त ३० मिनट का मंच प्रदर्शन श्रोताओं के सामने (संगीत सभा की तरह) अलग से होगा। मंच प्रदर्शन में परीक्षार्थी को इस वर्ष का राग प्रस्तुत करना होगा। गायन के परीक्षार्थी चाहे तो स्वर वाद्य की संगत भी केवल मंच प्रदर्शन के समय ले सकते हैं। निर्धारित समय में सभी कॉलम के प्रश्न पूछे जाने चाहिए। इस लिए परीक्षार्थी से उत्तर मिलने के लिए ज्यादा प्रतीक्षा नहीं करनी चाहिये। परीक्षार्थी को भी इस बात से परीक्षा के पूर्व अवगत कराये।

वाद्य मिलाना : तानपुरा तथा अपना वाद्य स्वर में मिलाना २५ अंक ।
विस्तृत अध्ययन के राग : कुल पांच रागों की विस्तृत चर्चा तथा निम्न प्रकार से प्रस्तुति :

१) संपूर्ण विस्तार के साथ विलंबित बंदिश (10 मिनट) 15 अंक ।

२) मध्य लय में बंदिश संपूर्ण विस्तार के साथ (7 मिनट): 12 अंक ।

३) विलंबित बंदिश तीन आलापों के साथ: 10 अंक ।

४) मध्यलय की बंदिश तानों के साथ: 7 अंक।

५) राम याचक आलाप के साथ विलंबित बंदिश,: 6 अंक।

कुल 50 अंक ।

सामान्य अध्ययन के राग: कुल पांच रागों की चर्चा तथा आलापद्वारा उन का स्वरूप स्पष्ट करना 25 अंक। धृपद-धमार नोम् तोम् के आलाप वाद्य हो तो आलाप जोड़, 5 अंक | धृपद धमार या तत्सम गत की बंदिश 2 अंक उस की तिगुन 3 अंक तथा डेढ्गुन या बोलबाट: 5 अंक
कुल 15 अंक।
उपशास्त्रीय गीत प्रकार ठुमरी, भजन, लोकगीत तथा नाट्यगीत, इन में से दो गीत प्रकार वाद्य हो तो तत्सम दो प्रकार की धुनें कुल 10 अंक अलग अलग तालों मे गाने की क्षमता विलंबित बंदिशें अलग अलग दो P तालों में 10 अंक मध्यलय की बंदिशें अलग अलग दो तालों में 10 अंक (दोनों में थोडा अपेक्षित विस्तार) **कुल 20 अंक ।**
पिछले राग प्रथम वर्ष से विशारद तक के रागों में से पांच रागों के आलाप तथा तानों का स्वरूप इसमें ऐसे राग पूछे जाय, जिन की चर्चा विस्तृत अध्ययन एवं सामान्य अध्ययन के रागों के साथ नही हुई। हर एक राग के लिए पांच पांच अंक। **कुल 20 अंक |**

अन्य गीत प्रकार : तराना, चतरंग, त्रिवट या अतिद्रुत लय की गत। इनमें से एक प्रकार उस में अपेक्षित विस्तार के साथ 10 अंक |

ताल तथा लयकारी:- 1 में 3, 2 में 3, 4 में 3 तथा 4 में 5, इनमें से किन्ही तीन लयकारियों में अलग अलग तालों के ठेके ताली खाली देकर बोलना 15 अंक।

स्वरलिपि: बंदिश सुनकर स्वरलिपि में लिखना तथा लिखि हुई स्वर लिपि को स्वर तथा लय में गाना 10 अंक।

इस वर्ष के रागो में से एक राग और उपशास्त्रीय संगीत अथवा सुगम संगीत 20 से 30 मिनट तक प्रस्तुति मंच प्रदर्शन 100 अंक

अलंकार (द्वितीय वर्ष)

गायन वादन (स्वरवाद्य)

पूर्णांक-500, न्यूनतम: 225
क्रियात्मक : 300 (क्रिया : 200 + मंच प्रदर्शन : 100) न्यूनतम : 155
शास्त्र : 200, न्यूनतम : 70

प्रथम प्रश्न पत्र
पूर्णांक: 100 न्यूनतम: 35

क्रियात्मक शास्त्र :

१) अलंकार द्वितीय वर्ष के रागों का विस्तृत अध्ययन, पहले सीखे हुये रागों के साथ उनकी तुलना।

२) नये रागों के निर्माण के तत्व (मिश्र, जोड़, संकीर्ण) उनकी आवश्यकता, भिन्न रागों के निर्माण के सिध्दांत तथा उनका विश्लेषण।

३) सीखी हुई बंदिशों को लिपिबध्द करना तथा दिये गये बोलों के आधार पर नई रचना बनाना एवं लिपिबध्द करना।

४) अलंकार द्वितीय वर्ष के रागों में मुक्त आलाप, तान, बोलतान की रचना करना।

५) रागांग वर्गीकरण का विवेचन एवं निम्नांकित रागों का विशेष अध्ययन :- तोड़ी, कानड़ा, नट, आसावरी तथा श्री ।

६) निबध्द गान और उसके प्रकार (प्रबन्ध से वर्तमान रचनाओं तक) तथा तन्त्र वाद्य की सभी प्रकार की रचनाओं का विस्तृत विवेचन ।

७) समान मात्राओं वाली तालों का तुलनात्मक विवेचन पाठ्यक्रम की तालों को आड़, कुआड़, बियाड़ के साथ अन्य कठिन लयकारियों में लिखने का अभ्यास ।

द्वितीय प्रश्न पत्र

पूर्णांक- 100, न्यूनतम : 35

१) **संगीत रचना के तत्त्व** :- स्वर स्वरसंगति (Melody), लय (Rhythm), छन्द (Metre), काव्यार्थ (Poetic Content), भाषा का चुनाव, संगीत के वाद्यों का उपयोग, स्वर शब्द संयोग, विचार आदि का विवेचन।

२) कर्नाटक एवं हिन्दुस्थानी संगीत पद्धति की तुलना, भारतीय तथा कर्नाटक संगीत के प्रचलित प्रबन्ध प्रकार, उनका विश्लेषण तथा तुलना। स्वर, राग, ताल तथा बंदिशों का स्वरूप।

३) संगीत के आविष्कार के आधुनिक प्रकार, पार्श्वसंगीत पार्श्व- कंठ संगीत, वृन्द वादन, वृन्द गान, संगीतिका, चित्र संगीत आदि का विवरण।

४) बंदिश की रचना करना, कविता को स्वरबध्द करना, कविताओं को राग ताल में बाँधना, विभिन्न अवसरों के लिये उपयुक्त स्वर रचना, वृन्द वादन, वृन्द गान, नृत्य नाट्य आदि के लिये बाँधना तथा उनको स्वरलिपिबध्द करना।

५) इतिहास :- शार्ङ्गदेव कालीन संगीत, मध्यकाल में भारतीय संगीत एवं अन्य संगीत पध्दति का पारस्पारिक सम्बन्ध, भारतीय संगीत पर विदेशी संगीत के प्रभाव पर विभिन्न दृष्टिकोण।

६) भारतीय संगीत वाद्यों का प्राचीन वर्गीकरण एवं निम्नांकित वाद्ययंत्रो का ऐतिहासिक ज्ञान :- मत्तकोकिला, चित्रा, विपञ्ची, घोषा, एकतन्त्री, किन्नरी, त्रितन्त्री, मृदंग, पटह, हुडुका, वंशी, मधुकरी, कांस्य, ताल एवं घंटा।

७) निम्नांकित संगीतज्ञों एवं संगीत शास्त्रियों का संगीत में योगदान :- सुरेंद्र मोहन टैगोर, विलियम जीन्स, कैप विलियर्ड, ई क्लेमेंटस, देवल, कृष्णानंद व्यास, रवींद्रनाथ टैगौर, फॉक्स स्ट्रेन्जवेज, मौलाबक्श, कृष्णनंदन बनर्जी, अप्पा तुलसी, राजा नवाब अली, विष्णु दिगम्बर पलुसकर, विष्णु नारायण भातखंडे, ओंकार नाथ ठाकूर, के. सी. डी. बृहस्पति, प्रो. प्रेमलता शर्मा।

अलंकार द्वितीय वर्ष

गायन वादन (स्वर वादय)

क्रियात्मक :

अलंकार द्वितीय वर्ष के लिये नये कुल आठ राग रखे हैं जिनमें विलंबित और द्रुतलय की रचनाओं के साथ आधा पौन घन्टे गाने / बजाने की क्षमता विद्यार्थी में होनी चाहिए। मंच प्रदर्शन के लिए विद्यार्थी इच्छानुसार इस वर्ष के रागों में से कोई राग चुन सकता है तथा एक ठुमरी, भजन अथवा ललित शैली की कोई भी रचना चुन सकता है। विस्तृत अध्ययन के रागों में विलंबित और द्रुत रचना के साथ पूर्ण विस्तार अपेक्षित है। इसके अलावा इन रागों में रचना वैचित्र्य आदि का ध्यान रखकर अतिरिक्त बन्दिशों का अच्छा संकलन विद्यार्थी को करना चाहिए, जिसमें धुपद, धमार, तराने, चतुरंग, त्रिवट, विविध तालों की बन्दिशों आदि को समुचित प्रतिनिधित्व प्राप्त हो। धृपद, चमार विस्तृत तथा साधारण रागों में से होना चाहिए। गायन वादन की विभिन्न शैलियों को प्रदर्शित करने वाली कुछ रचनाएँ भी संग्रहित करनी चाहिए। सभी प्रचलित तालों के ठेके विभिन्न कारियाँ (सुन, तिगुन, सवागुन आदि) में बोलने का अभ्यास होना चाहिए। स्वरलिपि करने तथा पढ़ने में विशेष योग्यता । तुरन्त नई स्वर रचना बनाने का अभ्यास ।

राग :

- विस्तृत अध्यन के लिये :-

  १) बिलासखानी तोडी   २) देवगिरी बिलावल

  ३) नटभैरव   ४) कोमल रिषभ आसावरी

  ५) रामकली   ६) देसी

  ७) जोगकंस   ८) बिहागडा

- मंडल की प्रथम तीन चार परीक्षाओं में जो मूल रागों की केवल बंदिशे और प्राथमिक स्वरूप की गायकी होती है उन्ही मूल राग में कुछ सालों के बाद अलंकार प्रथम वर्ष व द्वितीय वर्ष में विद्यार्थी अपने घराने की विशिष्ट व अष्टशंगप्रधान गायकी का प्रयोग कर सके इसी उद्देश से इस वर्ष मूल रागों में परिपूर्ण गायन अपेक्षित है। इससे कलाकार का व्यक्तित्व उभरकर सामने आयेगा। मूल रागों में से किन्ही पाँच रागों को तैय्यार करना है।

मूल राग :- (१) भूपाली   (२) मियाँमल्हार

(३) छायानट   (४) बागेश्री

(५) पूर्वी   (६) दरबारी कानड़ा

(७) केन्दार   (८) पूरिया धनाश्री

साधारण ज्ञान के लिए निम्नलिखित राग :

(१) रागेश्री   (२) श्री

(३) खम्बावती   (४) चंद्रकंस

(५) देवगांधार   (६) नायकी कानड़ा

(७) आभोग   (८) मेघ मल्हार

अंकपत्रिका :-

सूचना :- इस परीक्षा के लिए डेढ घंटा समय निर्धारित किया है। इस के अतिरिक्त 30 मिनिट का मंच प्रदर्शन श्रोताओं के सामने (संगीत सभा की तरह) अलग से होगा। मंच प्रदर्शन में परीक्षार्थी को इस वर्ष का राग प्रस्तुत करना होगा। गायन के परीक्षार्थी चाहे तो स्वर वाद्य की संगत भी केवल मंच प्रदर्शन के समय ले सकते हैं। निर्धारित समय में सभी कॉलम के प्रश्न पूछे जाने चाहिए। इस लिए परीक्षार्थी से उत्तर में मिलने के लिए ज्यादा प्रतीक्षा करनी नहीं चाहिये। परीक्षार्थी को भी इस बात से परीक्षा के पूर्व अवगत करायें।

वाद्य मिलाना :- तानपुरा तथा अपना वाद्य स्वर में मिलाना : 25 अंक विस्तृत अध्ययन के राग : कुल पांच रागों की विस्तृत चर्चा तथा निम्न प्रकार से प्रस्तुती ।

१) संपूर्ण विस्तार के साथ विलंबित बंदिश (10 मिनट) 15 अंक,

२) मध्य लय में बंदिश संपूर्ण विस्तार के साथ (7 मिनट) : 12 अंक,

३) विलंबित बंदिश 3 आलापों के साथ, 10 अंक,

४) मध्यलय की बंदिश तानों के साथ 7 अंक,

५) राग वाचक आलाप के साथ विलंबित बंदिश, 6 अंक

कुल 50 अंक ।

सामान्य अध्ययन के राग : कुल पांच रागों की चर्चा तथा आलापोंद्वारा उनका स्वरूप स्पष्ट करना : कुल 25 अंक

धृपद, धमार नोम् तोम् के आलाप वाद्य हो तो आलाप जोड़ : 5 अंक,

धूपद धमार या तत्सम गत की बंदिश, 2 अंक, उस की तिगुन : 3 अंक, तथा डेढगुन या बोलबांट 5 अंक : कुल 15 अंक।

उपशास्त्रीय गीत प्रकार ठुमरी, भजन, लोकगीत तथा नाट्यगीत,

इन में से दो गीत प्रकार । वाद्य हो तो तत्सम प्रकार की दो धुनें । 10 अंक ।

अलग अलग तालों में गाने की क्षमता : विलंबित बंदिशें अलग अलग तालों में : 10 अंक, मेध्यलय की बंदिशें अलग अलग दो तालों मे : 10 अंक, (दोनों में थोड़ा अपेक्षित विस्तार) : कुल 20 अंक।

पिछले राग : प्रथम वर्ष से विशारद तक के रागों में से पांच रागों के आलाप तथा तानों का स्वरूप। इस में ऐसे राग पूछे जाएँ, जिस की चर्चा विस्तृत अध्ययन एवं सामान्य अध्ययन के रागों के साथ नही हुई। 20 अंक,

अन्य गीत प्रकार : तराना, चतरंग, त्रिवट या अतिद्रुत लय की गत । इन में से एक प्रकार उस में अपेक्षित विस्तार के साथ : 10 अंक ।

ताल तथा लयकारी : 1 मे 3, 2 में 3, 4 में 3 तथा 4 में 5, इन में से किन्ही तीन लयकारियों में अलग अलग तालों के ठेके वाली खाली देवार बोलना 15 अंक ।

स्वरलिपि : बंदिश सुनकर स्वर लिपि में लिखना तथा लिखि हुई स्वर लिपि को स्वर तथा लय में गाना 10 अंक ।

इस वर्ष के रागो में से एक राग और उपशास्त्रीय संगीत अथवा सुगम संगीत 20 से 30 मिनट तक प्रस्तुति मंच प्रदर्शन : 100 अंक ।

संगीत विशारद गायन/वादन प्रथम एवं द्वितीय वर्ष के लिए प्रस्तावित पुस्तकों की सूची

अ. नं.	पुस्तक का नाम	लेखक
1	राग विज्ञान भाग 1,2,3,4	पं. विनायकराव पटवर्धन
2	क्रमिक पुस्तक मालिका भाग 2,3,4	पं. बी. एन. भातखण्डे
3	संगीत प्रभाकर दर्शिका	पं. एन. एल. गुणे
4	राग शरण भाग 1,2	गीता बॅनर्जी
5	संगीत शास्त्र दर्पण भाग 1,2	शान्ती गोवर्धन
6	संगीत प्रवीण दर्शिका भाग 1	पं. एन. एल. गुणे
7	अभिनव गीतांजली भाग–1	पं. रामाश्रय झा
8	संगीत विशारद	बसंत
9	संगीत निबन्ध माला	जे. एन. पाठक
10	हमारे संगीत रत्न	संगीत कार्यालय, हाथरस
11	भारतीय संगीत का इतिहास	डॉ. शरदचन्द्र परांजपे
12	भारतीय संगीत का इतिहास	ठाकूर जयदेव सिंह
13	निबन्ध संगीत	संगीत कार्यालय, हाथरस
14	हमारे प्रिय संगीतज्ञ	हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव
15	पाश्चात्य स्वरलिपि एवं भारतीय संगीत	डॉ. स्वतन्त्र शर्मा
16	संगीत के घरानों की चर्चा	डॉ. सुशिल कुमार चौबे
17	ख्याल गायकी का विकास	मधुबाला सक्सेना
18	संगीत रत्नाकर हिंदी टीका 1, 2	संगीत कार्यालय, हाथरस
19	रवींद्र संगीत	डॉ. अनीता सेन
20	प्रभाकर प्रश्नोत्तर	हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव
21	संगीत के प्रमुख शास्त्रीय सिद्धान्त	डॉ. सुभाष रानी चौधरी
22	हिन्दुस्तानी संगीत में शुद्ध, छायलग एवं संकीर्ण रागों की अवधारणा	डॉ. भारती शर्मा
23	संगीत शास्त्र विजयिनी (मराठी)	डॉ. नारायणराव मंगरूळकर
24	संगीतातील घराणी आणि चरित्रे (मराठी)	डॉ. नारायणराव मंगरूळकर

संगीत अलंकार गायन/वादन प्रथम एवं द्वितीय वर्ष के लिए प्रस्तावित पुस्तकों की सूची

अ . . नं	पुस्तक का नाम	लेखक
1	राग विज्ञान भाग 1, 2, 3, 4, 5, 6, 7	पंविनायकराव पटवर्धन .
2	क्रमिक पुस्तक मालिका भाग 2, 3, 4, 5, 6	पंभातखण्डे . एन . व्ही .
3	संगीत प्रवीण दर्शिका भाग 1, 2, 3, 4	पंगुणे . एल . एन .
4	राग बोध भाग 1से 6	प्रोदेवधर . आर . बी .
5	अभिनय गीतांजली भाग 1, 2, 3, 4	पंरामाश्रय झा .
6	संगीत निबन्ध	अग्निहोत्री
7	निबन्ध संगीत	संगीत कार्यालय, हाथरस
8	हमारे संगीत रत्न	संगीत कार्यालय, हाथरस
9	संगीत चिंतामणि	आचार्य बृहस्पति
10	संगीत शास्त्र प्रवीण	जेपाठक . एन .
11	संगीत शास्त्र मीमांसा	जेपाठक . एन .
12	संगीत विशारद	बसंत
13	राग वैभव	पंआठवले . आर . व्ही .
14	संगीत निबन्ध माला	जेपाठक . एन .
15	भारतीय संगीत का इतिहास	डॉशरदचन्द्र परांजपे .
16	भारतीय संगीत का इतिहास	ठाकूर जयदेव सिंह
17	प्रणव भारती	पंओमकारनाथ ठाकूर .
18	ध्वनि और संगीत	ललित किशोर सिंह
19	उत्तरी एवं दक्षिणी संगीत पद्धतियों का तुलनात्मक अध्ययन	पंभातखंडे . एन . बी .
20	रवींद्र संगीत	डॉअनिता सेन .
21	प्रविण प्रवाह	हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव
22	पाश्चात्य सौन्दर्य शास्त्र का इतिहास	सुनृत कुमार बाजपाई
23	कानडा का उद्भव और विकास	डॉसरोज घोष .
24	हिन्दुस्तानी संगीत में राग की उत्पत्ति एवं विकास	सुनन्दा पाठक

25	भारत का संगीत सिद्धान्त	आचार्य बृहस्पति
26	ख्याल गायकी का विकास	डॉ. मधुबाला सक्सेना
27	पाश्चात्य स्वरलिपि एवं भारतीय संगीत	डॉ. स्वतन्त्र शर्मा
28	हिन्दुस्तानी संगीत मे होली गान	नीता माथुर
29	संगीत के प्रमुख शास्त्रीय सिद्धान्त	डॉ. सुभाष रानी चौधरी
30	हिन्दुस्तानी संगीत मे शुद्ध, छायाला एवं संकीर्ण रागों की अवधारणा	डॉ. भारती शर्मा
31	संगीत प्रभाकर दर्शिका	एन. एलगुणे .
32	संगीत के घरानों की चर्चा	डॉ. सुशिल कुमार चौबे
33	ठुमरी की उत्पत्ति, विकास और शैलियाँ	पं. शत्रुघ्न शुक्ल
34	नाट्य शास्त्र २८ याँ अध्याय (हिन्दी टीका)	आचार्य बृहस्पति
35	स्वरमयी	डॉ. प्रभा अत्रे
36	सुस्वराली	डॉ. प्रभा अत्रे